पु•ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-9
Hindi
Specimen Copy
April-May
2021-22

पाठ-सूची

क्रमांक	माह	पाठ का नाम	लेखक का नाम
०१	अप्रैल-मई	गद्य पाठ-१-धूल	रामविलास शर्मा
०२		पद्य पाठ-९-अब कैसे छूटे राम	संत रैदास
०३		संचयन पाठ-१-गिल्लू	महादेवी वर्मा
		व्याकरण-संधि लेखन-अनुच्छेद,पत्र-लेखन	

पाठ-१-धूल -लेखक-रामविलास शर्मा

*पाठ सार-

लेखक-रामविलास शर्मा -इस लेख में लेखक ने धूल की जीवन में महत्ता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। लेखक ने धूल भरे शिशुओं को धूल भरे हीरे कहकर संबोधित किया है। धूल के बिना शिशुओं की कल्पना नहीं की जा सकती है। हमारी सभ्यता धूल के संसर्ग से बचना चाहती है। लेखक आगे कहता है कि जो बचपन में धूल से खेला है , वह जवानी में अखाड़े की मिट्टी में सनने से कैसे वंचित रह सकता हैरु जितने सारतत्त्व जीवन के लिए अनिवार्य हैं, वे सब मिट्टी से ही मिलते हैं। ग्राम भाषाओं में हमने गोधूलि शब्द को अमर कर दिया है। गोधूलि पर कितने कवियों ने अपनी कलम नहीं तोड़ दी , लेकिन यह गोधूलि गाँव की अपनी संपत्ति है , जो शहरों के बाँटे नहीं पड़ी। श्रद्धा, भक्ति, स्नेह इनकी चरम व्यंजना के लिए धूल से बढ़कर और कौन साधन हैरु यहाँ तक कि घृणा, असूया आदि के लिए भी धूल चाटने , धूल झाड़ने आदि की क्रियाएँ प्रचलित हैं ।धूल, धूलि, धूली, धूरि आदि की व्यंजनाएँ अलग-अलग हैं। धूल जीवन का यथार्थवादी गद्य, धूलि उसकी कविता है। धूली छायावादी दर्शन है ,जिसकी वास्तविकता संदिग्ध है और धूरि लोक-संस्कृति का नवीन जागरण है। इन सबका रंग एक ही है, रूप में भिन्नता जो भी हो। ये धूल भरे हीरे अमर हैं|

*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न-१-हीरे के प्रेमी उसे किस रूप में पसंद करते हैं?

उत्तर-हीरे के प्रेमी उसे साफ़-सुथरा, खरादा हुआ और आँखों में चकाचौंध पैदा करता हुआ पसंद करते हैं।

प्रश्न१२-लेखक ने संसार में किस प्रकार के सुख को दुर्लभ माना हैरु

उत्तर-गाँव की मिट्टी में खेलने में और अखाड़े की मिट्टी से शरीर रगड़ने से जिस तरह का सुख मिलता है, लेखक ने संसार में उसे प्रकार के सुख को दुर्लभ बताया है।

प्रश्न२३-मिट्टी की आभा क्या हैरु उसकी पहचान किससे होती हैरु

उत्तर-मिट्टी की आभा है उसकी धूल। मिट्टी के रंग-रूप से उसकी पहचान होती है।

*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (३०-४० शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न-।-धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना क्यों नहीं की जा सकती?

उत्तर-धूल के बिना शिशु की कल्पना इसलिए नहीं की जा सकती है क्योंकि शिशु चलते, खेलते, उठते-बैठते जब गिरता है तो उसके शरीर पर धूल लगना ही है। इस धूल धूसरित शिशु का सौंदर्य और भी बढ़ जाता है। धूल उसके सौंदर्य को बढ़ाती है|

प्रश्न-२-हमारी सभ्यता धूल से क्यों बचना चाहती हैरु

उत्तर-हमारी सभ्यता धूल को गर्द समझती है। वह बनावटी प्रसाधन सामग्री और सलमे-सितारों में ही सौंदर्य मानती है। गाँव की धूल में उन सलमे-सितारों के धुंधले पड़ने की आशंका होती है। इसलिए वह धूल से अर्थात् ग्राम्य संस्कृति से बचना चाहती है।

प्रश्न-३-अखाड़े की मिट्टी की क्या विशेषता होती हैरु

उत्तर-अखाड़े की मिट्टी कोई साधारण मिट्टी नहीं होती है। यह तेल और मछे से सिझाई गई वह मिट्टी होती है जिसे देवताओं पर चढ़ाया जाता है। यह मिट्टी शरीर को बलवान बनाती है। युवा इस मिट्टी पर निर्वद्व भाव से लेटकर ऐसा महसूस करता है मानो वह विश्वविजेता हो|

प्रश्न-४-श्रद्धा, भक्ति, स्नेह की व्यंजना के लिए धूल सर्वोत्तम साधन किस प्रकार हैरु

उत्तर-श्रद्धा, भक्ति और स्नेह प्रकट करने के लिए धूल सर्वोत्तम साधन है। कोई योद्धा या विदेशगत मनुष्य अपने देश में लौटकर पहले उसकी धूल को माथे पर लगाता है। इस प्रकार वह अपनी धरती के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करता है।

प्रश्न-५-इस पाठ में लेखक ने नगरीय सभ्यता पर क्या व्यंग्य किया हैरु

उत्तर-इस पाठ में लेखक ने नगरीय सभ्यता पर यह व्यंग्य किया है कि नगर में बसने वाले लोग इस बात से डरते हैं कि धूल उन्हें गंदा न कर दे। वे सोचते हैं कि धूल के संसर्ग से उनकी चमक-दमक फीकी पड़ जाएगी। मैले होने के डर से वे अपने शिशुओं को भी धूल से दूर रखते हैं|

*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (५०-६० शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न-१-।लेखक 'बालकृष्ण' के मुँह पर छाई गोधूलि को श्रेष्ठ क्यों मानता हैरु

उत्तर-लेखक बालकृष्ण के मुँह पर छाई गोधूलि को श्रेष्ठ मानता है। उसके अनुसार, इसके कारण उसकी आंतरिक आभा और भी खिल उठती है। बालक का धूल-धूसरित मुख बनावटी श्रृंगार प्रसाधनों से कहीं अधिक मनमोहक होता है। यह वास्तविक होने के कारण कृत्रिम सौंदर्य सामग्री से अधिक श्रेष्ठ होता है। इसमें बालक की सहज पार्थिवता, अर्थात् शारीरिक कांति जगमगा उठती है। इसकी तुलना में बनावटी सजाव-श्रृंगार कहीं नहीं टिकता|

प्रश्न २-।लेखक ने धूल और मिट्टी में क्या अंतर बताया हैरु

उत्तरलेखक ने धूल और मिट्टी में अंतर बताते हुए लिखा है कि धूल मिट्टी का अंश होती है। धूल, मिट्टी से ही बनती है। जिन फूलों को हम अपनी प्रिय वस्तुओं का अपमान बनाते हैं, वे सब मिट्टी की ही उपज हैं। फूलों में जो रस, रंग, सुगंध और कोमलता आदि है वह भी तो मिट्टी की उपज है। मिट्टी और धूल में उतना ही अंतर है जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में है। मिट्टी की चमक और सुंदरता ही धूल के नाम से जानी जाती है। मिट्टी के गुण, रूप-रंग की पहचान भी तो धूल से ही होती है। धूल ही मिट्टी का स्वाभाविक श्वेत रंग होता है|

प्रश्न ३-ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के कौन-कौन से सुंदर चित्र प्रस्तुत करती हैरु

उत्तर-ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के द्वारा अनेक सुंदर चित्र प्रस्तुत करती है। जब अमराइयों के पीछे छिपे सूर्य की किरणें धूल पर पड़ती हैं तो ऐसा लगता है कि मानो आकाश में सोने की परत छा गई हो सूर्यास्त के बाद लीक पर गाड़ी के निकल जाने के बाद धूले आसमान में ऐसे छा जाती है मानो रुई के बादल छा गए हों। या यों लगता है मानो वह ऐरावत हाथी के जाने के लिए बनाया गया तारों भरा मार्ग हो। चाँदनी रात में मेले पर जाने वाली गाड़ियों के पीछे धूल ऐसे उठती है मानो कवि-कल्पना उड़ान पर हो।

प्रश्न ४-'हीरा वही घन चोट न टूटे'-का संदर्भ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-हीरा वही जो घन चोट न टूटे' कथन का संदर्भ पाठ के आधार पर यह है कि सच्चे हीरे अर्थात् किसान, देशभक्त आदि कड़ी से कड़ी परीक्षा को हँसते हुए झेल लेते हैं। वीर सैनिक और दशभक्त विपरीत परिस्थितियों में शत्रुओं से युद्ध करते हुए अपनी जान तक दे देते हैं परंतु पीठ नहीं दिखाते हैं। इसी प्रकार किसान भी सरदी, गरमी बरसात आदि की मार झेलकर फ़सल उगाते हैं। ये विपरीत परिस्थितियों में बड़े से बड़े संकटों के सामने नहीं झुकते हैं और अपना साहस बनाए रखते हैं|

प्रश्न ५-धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि की व्यंजनाओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-मिट्टी इस भौतिक संसार की जननी है। रूप, रस, गंध, स्पर्श के सभी भेद इसी मिट्टी में से जन्म लेते हैं। मिट्टी के दो रूप हैं-उज्ज्वल तथा मलिन। मिट्टी की जो आभा है, उसका नाम है धूल। यह मिट्टी का श्रृंगार है। यह एक प्रकार से मिट्टी की ऊपरी परत है जो गोधूलि के समय आसमान में उड़ती है या चाँदनी रात में गाड़ियों के पीछे-पीछे उठ खड़ी होती । है। यह फूलों की पंखुड़ियों पर या शिशुओं के मुख पर श्रृंगार के समान सुशोभित होती है। 'गर्द' मैल को कहते हैं|

प्रश्न ७-'धूल' पाठ का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर'धूल' पाठ के माध्यम से लेखक ने धूल को हेय नहीं श्रद्धेय बताया है। पाठ के माध्यम से धूल की उपयोगिता एवं महत्त्व को भी बताया गया है। धूल बचपन की अनेकानेक यादों से जुड़ी है। शहरवासियों की चमक-दमक के प्रति लगाव एवं धूल को हेय समझने की प्रवृत्ति पर कटाक्ष करते हुए लेखक ने कहा है कि शहरी सभ्यता आधुनिक बनने के नाम पर धूल से स्वयं ही दूर नहीं भागती बल्कि अपने बच्चों को भी उसके सामीप्य से बचाती है। धूल को श्रद्धाभक्ति स्नेह आदि भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए सर्वोत्तम साधन बताया गया है। धूल हमें लोकसंस्कृति से जोड़ती है। इसके नन्हें-नन्हें कण भी हमें देशभक्ति का पाठ पढ़ाते हैं। धूल की वास्तविकता का ज्ञान कराना ही इस पाठ का मूलभाव है|

प्रश्न ८-कविता को विडंबना मानते हुए लखक ने क्या कहा है?

उत्तर-लेखक ने किसी पुस्तक विक्रेता द्वारा दिए गए निमंत्रण पत्र में गोधूलि बेला का उल्लेख देखा तो उसे लगा कि यह कविता की विडंबना है। कवियों ने कविता में बार-बार गोधूलि की इतनी महिमा गाई है कि

पुस्तक विक्रेता महोदय उस शब्द का प्रयोग कर बैठे। परंतु सच यह है कि शहरों में न तो गाएँ होती हैं, न गोधूलि बेला। अतः यह गोधूलि शब्द केवल कविता के गुणगान को सुनकर प्रयुक्त हुआ है|

*निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न १-फूल के ऊपर जो रेणु उसका श्रृंगार बनती है, वही धूल शिशु के मुँह पर उसकी सहज पार्थिवता को निखार देती है।

उत्तर-आशय है कि धूल को भूलकर भी हेय नहीं मानना चाहिए। कारण यह है कि रेणु अर्थात् धूल फूलों की पंखुडियों पर पड़कर उसके सौंदर्य में वृद्धि कर देती है। यह धूल जब बालकृष्ण के खेलने-कूदने से उड़कर उनके चेहरे पर छा जाती है, इस धूल के कारण बालक का सौंदर्य और भी बढ़ जाता है। यह सौंदर्य किसी भी प्रसाधन के प्रयोग से बढ़े सौंदर्य से भी बढ़कर है|

प्रश्न २-'धन्य-धन्य वे हैं नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की'-लेखक इन पंक्तियों द्वारा क्या कहना चाहता हैरु

उत्तर-इन पंक्तियों के द्वारा लेखक कहना चाहता है कि इन पंक्तियों का कवि धूल की महिमा का गान तो करता है। किंतु उसके मन में धूल को लेकर गर्व नहीं है। वह धूल को मैला करने वाली चीज़ मानता है। अतः उसके मन में धूल के प्रति अपराध बोध है। दूसरे, वह कवि बालकों में भी भेदभाव करता है। वह धूल सने बालकों और अन्य बालकों में भेद करता है|

प्रश्न ३-मिट्टी और धूल में अंतर है, लेकिन उतना ही, जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में।

उत्तर-आशय यह है कि शब्द में रस निहित है। इसके कारण ही शब्द का महत्त्व है। इसी प्रकार शरीर का महत्त्व प्राण होने से और चाँद का महत्त्व उसकी अपनी चाँदनी के कारण है। धूल मिट्टी का ही अंश है। इसे मिट्टी से उसी तरह से अलग नहीं किया जा सकता है जैसे रस को शब्द से, देह को प्राणों से और चाँदनी को चाँद से। इसी प्रकार मिट्टी और धूल का अटूट संबंध है|

प्रश्न ४-हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे।

उत्तर-लेखक नगर में बसने वालों से कहता है-यदि तुम वास्तव में सच्चे देशभक्त हो तो इस धूल को अपने माथे से लगाओ, अर्थात् आम ग्रामीण व्यक्ति का सम्मान करो। परंतु यदि तुम इतना नहीं कर सकते तो कम-से-कम इनके बीच में रहो। इनसे संपर्क न तोड़ो। इनका तिरस्कार न करो। इनका महत्त्व स्वीकार करो।

प्रश्न ५-वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा।

उत्तर-घन की चोट खाने पर भी न टूटकर हीरे ने अपनी दृढ़ता का परिचय दिया है, पर इसके बाद भी इनकी परख करने पर वह पलटकर वार भी कर सकता है तब तुम्हें उसका महत्त्व पता चलेगा। अभी जिसे धूल से मैला समझकर हेय समझ रहे हैं तब उसकी कीमत का ज्ञान हो जाएगा। इससे काँच और हीरे का अंतर भी पता लग जाएगा|

काव्य-पाठ-९- अब कैसे छूटै राम – रैदास

पद पाठ सार:-

यहाँ पर रैदास के दो पद लिए गए हैं। पहले पद में कवि ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर अपने आराध्य की भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है कवि के कहने का अभिप्राय है कि एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान् की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है। कवि कहता है कि यदि प्रभु चंदन है तो भक्त पानी है।जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है। यदि प्रभु बादल है तो भक्त मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। यदि प्रभु चाँद है तो भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है।यदि प्रभु दीपक है तो भक्त उसकी बत्ती की तरह है जो दिन रात रोशनी देती रहती है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम मोती हो तो तुम्हारा भक्त उस धागे के समान है जिसमें मोतियाँ पिरोई जाती हैं। उसका असर ऐसा होता है। यदि प्रभु स्वामी है तो कवि दास यानि नौकर है। दूसरे पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं।

कवि अपने आराध्य को ही अपना सबकुछ मानते हैं। कवि भगवान की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि भगवान गरीबों और दीन-दुःखियों पर दया करने वाले हैं, उनके माथे पर सजा हुआ मुकुट उनकी शोभा को बड़ा रहा है। कवि कहते हैं कि भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है।भगवान के छूने से अछूत मनुष्यों का भी कल्याण हो जाता है क्योंकि भगवान अपने प्रताप से किसी नीच जाति के मनुष्य को भी ऊँचा बना सकते हैं। कवि उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार किया था वही बाकी लोगों का भी उद्धार करेंगे। कवि कहते हैं कि हे सज्जन व्यक्तियों तुम सब सुनो उस हरि के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है।

*-रैदास के पद अर्थ सहित

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँगअँग बास समानी।-
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

शब्दार्थ –

बास - गंध, वास
समानी - समाना (सुगंध का बस जाना), बसा हुआ (समाहित)
घन - बादल
मोरा - मोर, मयूर
चितवत - देखना, निरखना
चकोर - तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है
बाती - बत्ती, रुई, जिसे तेल में डालकर दिया जलाते हैं
जोति - ज्योति, देवता के प्रीत्यर्थ जलाया जाने वाला दीपक
बरै - बढ़ाना, जलना
राती - रात्रि
सुहागा - सोने को शुद्ध करने के लिए प्रयोग में आने वाला क्षारद्रव्य
दासा - दास, सेवक

व्याख्या - इस पद में कवि ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर अपने आराध्य की भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है कवि के कहने का अभिप्राय है कि एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान् की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है।
कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम चंदन हो तो तुम्हारा भक्त पानी है। कवि कहता है कि जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु!
यदि तुम बादल हो तो तुम्हारा भक्त किसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है।
कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम चाँद हो तो तुम्हारा भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है।व्याख्या - इस पद में कवि ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर अपने आराध्य की भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है कवि के कहने का अभिप्राय है कि एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान् की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है।
कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम चंदन हो तो तुम्हारा भक्त पानी है। कवि कहता है कि जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु!
यदि तुम बादल हो तो तुम्हारा भक्त किसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है।
कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम चाँद हो तो तुम्हारा भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है।

२-ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढ़रै।
नीचहू ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥

शब्दार्थ –

लाल- स्वामी -
कउनु कौन -
गरीब निवाजु दुखियों पर दया करने-दीन -वाला
गुसईआ स्वामी -, गुसाईं
माथै छत्रु धरै मस्तक पर मुकुट धारण करने वाला -
छोति छुआछूत -, अस्पृश्यता
जगत कउ लागै संसार के लोगों को लगती है -
ता पर तुहीं ढरै उन पर द्रवित होता है -
नीचहू ऊच करै नीच को भी ऊँची पदवी प्रदान करता है -
नामदेव महाराष्ट्र के एक -प्रसिद्ध संत, इन्होंने मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में रचना की है|
हरिजीउ - हरि जी से
सभै सरै सब कुछ संभव हो जाता -

व्याख्या

इस पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि हेमेरे स्वामी ! तुझ बिन मेरा कौन है अर्थात कवि अपनेआराध्य को ही अपना सबकुछ मानते हैं। कवि भगवान की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि भगवान गरीबों और दीनदुःखियों पर दया करने - वाले हैं, उनके माथे पर सजा हुआ मुकुट उनकी शोभा को बड़ा रहा है। कवि कहते हैं कि भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान् की इच्छा के बिना दुनिया में कोई भी कार्य संभव नहीं है। कवि कहते हैं कि भगवान के छूने से अछूत मनुष्यों का भी कल्याण हो जाता है क्योंकि भगवान अपने प्रताप से किसी नीच जाति के मनुष्य को भी ऊँचा बना सकते हैं अर्थात भगवान् मनुष्यों के द्वारा किए गए कर्मों को देखते हैं न कि किसी मनुष्य की जाति को। कवि उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार किया था वही बाकी

लोगों का भी उद्धार करेंगे। कवि कहते हैं कि हे सज्जन व्यक्तियों तुम सब सुनो!, उस हरि के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर:

प्रश्न १- यदि भगवान् चंदन है तो भक्त क्या है?

(ब० पानी

(द्य० मोर

(ऋ० चकोर

(म० बत्ती

प्रश्न २- भगवान् के माथे पर क्या शोभा दे रहा है?

(ब० पानी

(द्य० मुकुट

(ऋ० पंख

(म० बत्ती

प्रश्न ३- (भगवान् किसका कल्याण बिना भेदभाव के करते है?

(ब० अमीरों का

(द्य० मोर भक्तों का

(ऋ० अछूत मनुष्यों का

(म० इनमें से किसी का नहीं

प्रश्न ४- (कवि किसे अपना सबकुछ मानते है?

(ब० भगवान् को

(द्य० संतों को

(ऋ० अछूत मनुष्यों को

(म० भक्तों को

प्रश्न ५- (दूसरे पद में कवि ने किसका गुणगान किया है?

(ब० भगवान्

(द्य० संतों

(ऋ० अछूत

(म० भक्तों

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीजों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

(क)पहले पद में भगवान और भक्त की निम्नलिखित चीजों से तुलना की गई है|

भगवान की चंदन से और भक्त की पानी से

भगवान की घन बन से और भक्त की मोर से|
भगवान की चाँद से और भक्त की चकोर से
भगवान की दीपक से और भक्त की बाती से
भगवान की मोती से और भक्त की धागे से
भगवान की सुहागे से और भक्त को सोने से।

(ख) पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे-पानी, समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए-

(ख) अन्य तुकांत शब्द इस प्रकार हैं

मोरा – चकोरा चंद – चकोर मोती – धागा सोना – सुहागा स्वामी – दास

(घ) दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए-

(घ) दूसरे पद में कवि ने अपने प्रभु को 'गरीब निवाजु' कहा है। इसका अर्थ है-दीन-दुखियों पर दया करने वाला। प्रभु ने रैदास जैसे अछूत माने जाने वाले प्राणी को संत की पदवी प्रदान की। रैदास जन-जन के पूज्य बने। उन्हें महान संतों जैसा सम्मान मिला। रैदास की दृष्टि में यह उनके प्रभु की दीन-दयालुता और अपार कृपा ही है-

(ङ) दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ड) इसका आशय है-रैदास अछूत माने जाते थे। वे जाति से चमार थे। इसलिए लोग उनके छूने में भी दोष मानते थे। फिर भी प्रभु उन पर द्रवित हो गए। उन्होंने उन्हें महान संत बना दिया।

(च) "रैदास' ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

(च) रैदास ने अपने स्वामी को 'लाल', गरीब निवाजु, गुसईआ, गोबिंदु आदि नामों से पुकारा है|

प्रश्न 2.नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) जाकी अँग-अँग बास समानी

(ख) जैसे चितवत चंद चकोरा

(ग) जाकी जोति बरै दिन राती

(घ) ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै

(ङ) नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै|

क-भाव यह है कि कवि रैदास अपने प्रभु से अनन्य भक्ति करते हैं। वे अपने आराध्य प्रभु से अपना संबंध विभिन्न रूपों में जोड़कर उनके प्रति अनन्य भक्ति प्रकट करते हैं। रैदास अपने प्रभु को चंदन और खुद को पानी बताकर उनसे घनिष्ठ संबंध जोड़ते हैं। जिस तरह चंदन और पानी से बना लेप अपनी महक बिखेरता है उसी प्रकार प्रभु भक्ति और प्रभु कृपा के कारण रैदास का तन-मन सुगंध से भर उठा है जिसकी महक अंग-अंग को महसूस हो रही है।

ख- भाव यह है कि रैदास अपने आराध्य प्रभु से अनन्य भक्ति करते हैं। वे अपने प्रभु के दर्शन पाकर प्रसन्न होते हैं। प्रभु-दर्शन से उनकी आँखें तृप्त नहीं होती हैं। वे कहते हैं कि जिस प्रकार चकोर पक्षी चंद्रमा को निहारता रहता है। उसी प्रकार वे भी अपने आराध्य का दर्शनकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं|

ग- भाव यह है कि अपने आराध्य प्रभु से अनन्यभक्ति एवं प्रेम करने वाला कवि अपने प्रभु को दीपक और खुद को उसकी बाती मानता है। जिस प्रकार दीपक और बाती प्रकाश फैलाते हैं उसी प्रकार कवि अपने मन में प्रभु भक्ति की ज्योति जलाए रखना चाहता है|

घ-प्रभु की दयालुता, उदारता और गरीबों से विशेष प्रेम करने के विषय में कवि बताता है कि हमारे समाज में अस्पृदश्यता के कारण जिन्हें कुछ लोग छूना भी पसंद नहीं करते हैं, उन पर दयालु प्रभु असीम कृपा करता है। प्रभु जैसी कृपा उन पर कोई नहीं करता है। प्रभु कृपा से अछूत समझे जाने वाले लोग भी आदर के पात्र बन जाते हैं।

ङ-संत रैदास के प्रभु अत्यंत दयालु हैं। समाज के दीन-हीन और गरीब लोगों पर उनका प्रभु विशेष दया दृष्टि रखता है। प्रभु की दया पाकर नीच व्यक्ति भी ऊँचा बन जाता है। ऐसे व्यक्ति को समाज में किसी का डर नहीं रह जाता है। अर्थात् प्रभु की कृपा पाने के बाद नीचा समझा जाने वाला व्यक्ति भी ऊँचा और निर्भय हो जाता है|

प्रश्न 3.रैदास के इन पदों का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-पहले पद का केंद्रीय भाव यह है कि राम नाम की रट अब छूट नहीं सकती। रैदास ने राम नाम को अपने अंग-अंग में समा लिया है। वह उनका अनन्य भक्त बन चुका है।

दूसरे पद का केंद्रीय भाव यह है कि प्रभु दीन दयालु हैं, कृपालु हैं, सर्वसमर्थ हैं तथा निडर हैं। वे अपनी कृपा से नीच को उच्च बना सकते हैं। वे उद्धारकर्ता हैं|

*लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.भक्त कवि कबीर, गुरु नानक, नामदेव और मीराबाई की रचनाओं का संकलन कीजिए।

उत्तर-छात्र इन कवियों की रचनाओं का संकलन स्वयं करें।

प्रश्न 2.रैदास को किसके नाम की रट लगी है? वह उस आदत को क्यों नहीं छोड़ पा रहे हैं?

उत्तर-रैदास को राम के नाम की रट लगी है। वह इस आदत को इसलिए नहीं छोड़ पा रहे हैं, क्योंकि वे अपने आराध्ये प्रभु के साथ मिलकर उसी तरह एकाकार हो गए हैं; जैसे-चंदन और पानी मिलकर एक-दूसरे के पूरक हो जाते हैं।

प्रश्न.3.जाकी अंग-अंग वास समानी' में जाकी' किसके लिए प्रयुक्त है? इससे कवि को क्या अभिप्राय है?

उत्तर-'जाकी अंग-अंग वास समानी' में 'जाकी' शब्द चंदन के लिए प्रयुक्त है। इससे कवि का अभिप्राय है जिस प्रकार चंदन में पानी मिलाने पर इसकी महक फैल जाती है, उसी प्रकार प्रभु की भक्ति का आनंद कवि के अंग-अंग में समाया हुआ है।

प्रश्न 4.'तुम घन बन हम मोरा'-ऐसी कवि ने क्यों कहा है?

उत्तर-रैदास अपने प्रभु के अनन्य भक्त हैं, जिन्हें अपने आराध्य को देखने से असीम खुशी मिलती है। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि जिस प्रकार वन में रहने वाला मोर आसमान में घिरे बादलों को देख प्रसन्न हो जाता है, उसी प्रकार कवि भी अपने आराध्य को देखकर प्रसन्न होता है।

प्रश्न 5.जैसे चितवत चंद चकोरा' के माध्यम से रैदास ने क्या कहना चाहा है?

उत्तर-'जैसे चितवत चंद चकोरा' के माध्यम से रैदास ने यह कहना चाहा है कि जिस प्रकार रात भर चाँद को देखने के बाद भी चकोर के नेत्र अतृप्त रह जाते हैं, उसी प्रकार कवि रैदास के नैन भी निरंतर प्रभु को देखने के बाद भी प्यासे रह जाते है|

प्रश्न.6.रैदास द्वारा रचित 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' को प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर-रैदास द्वारा रचित 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' में अपने आराध्य के नाम की रट की आदत न छोड़ पाने के माध्यम से कवि ने अपनी अटूट एवं अनन्य भक्ति भावना प्रकट की है। इसके अलावा उसने चंदन-पानी, दीपक-बाती आदि अनेक उदाहरणों द्वारा उनका सान्निध्य पाने तथा अपने स्वामी के प्रति दास्य भक्ति की स्वीकारोक्ति की है।

प्रश्न 7-रैदास ने अपने 'लाल' की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर-रैदास ने अपने 'लाल' की विशेषता बताते हुए उन्हें गरीब नवाजु दीन-दयालु और गरीबों का उद्धारक बताया है। कवि के लाल नीची जातिवालों पर कृपाकर उन्हें ऊँचा स्थान देते हैं तथा अछूत समझे जाने वालों का उद्धार करते हैं|

प्रश्न 8.कवि रैदास ने किन-किन संतों का उल्लेख अपने काव्य में किया है और क्यों?

उत्तर-कवि रैदास ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैन का उल्लेख अपने काव्य में किया है। इसके उल्लेख के माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि उसके प्रभु गरीबों के उद्धारक हैं। उन्होंने गरीबों और कमज़ोर लोगों पर कृपा करके समाज में ऊँचा स्थान दिलाया है|

प्रश्न 9.कवि ने गरीब निवाजु किसे कहा है और क्यों ?

उत्तर-कवि ने गरीब निवाजु' अपने आराध्य प्रभु को कहा है, क्योंकि उन्होंने गरीबों और कमज़ोर समझे जानेवाले और अछूत कहलाने वालों का उद्धार किया है। इससे इन लोगों को समाज में मान-सम्मान और ऊँचा स्थान मिल सकी है|

*दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.पठित पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि रैदास की उनके प्रभु के साथ अटूट संबंध हैं।

उत्तर-पठित पद से ज्ञात होता है कि रैदास को अपने प्रभु के नाम की रट लग गई है जो अब छुट नहीं सकती है। इसके अलावा कवि ने अपने प्रभु को चंदन, बादल, चाँद, मोती और सोने के समान बताते हुए स्वयं को पानी, मोर, चकोर धाग और सुहागे के समान बताया है। इन रूपों में वह अपने प्रभु के साथ एकाकार हो गया है। इसके साथ कवि रैदास अपने प्रभु को स्वामी मानकर उनकी भक्ति करते हैं। इस तरह उनका अपने प्रभु के साथ अटूट संबंध है|

प्रश्न 2.कवि रैदास ने 'हरिजीउ' किसे कहा है? काव्यांश के आधार पर 'हरिजीउ' की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-कवि रैदास ने 'हरिजीउ' कहकर अपने आराध्य प्रभु को संबोधित किया है। कवि का मानना है कि उनके हरिजीउ के बिना माज के कमजोर समझे जाने को कृपा, स्नेह और प्यार कर ही नहीं सकता है। ऐसी कृपा करने वाला कोई और नहीं हो । सकता। समाज के अछूत समझे जाने वाले, नीच कहलाने वालों

को ऊँचा स्थान और मान-सम्मान दिलाने का काम कवि के 'हरिजीउ' ही कर सकते हैं। उसके 'हरजीउ' की कृपा से सारे कार्य पूरे हो जाते हैं|

प्रश्न 3.रैदास द्वारा रचित दूसरे पद 'ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै' को प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर-कवि रैदास द्वारा रचित इस पद्य में उनके आराध्य की दयालुता और दीन-दुखियों के प्रति विशेष प्रेम का वर्णन है। कवि का प्रभु गरीबों से जैसा प्रेम करता है, वैसा कोई और नहीं। वह गरीबों के माथे पर राजाओं-सा छत्र धराता है तो अछूत समझे जाने वाले वर्ग पर भी कृपा करता है। वह नीच समझे जाने वालों पर कृपा कर ऊँचा बनाता है। उसने अनेक गरीबों का उद्धार कर यह दर्शा दिया है कि उसकी कृपा से सभी कार्य सफल हो जाते हैं|

संचयन पाठ-१-गिल्लू

लेखिका महादेवी वर्मा -

जन्म – 1907 इस पाठ में लेखिका ने अपने जीवन के एक अनुभव को हमारे साथ सांझा किया है। यहाँ लेखिका ने अपने जीवन के उस पड़ाव का वर्णन किया है जहाँ उन्होंने एक गिलहरी के बच्चे को कवों से बचाया था और उसे अपने घर में रखा था। लेखिका ने उस गिलहरी के बच्चे का नाम गिल्लू रखा था। यह पाठ उसी के इर्द-गिर्द घूम रहा है इसीलिए इस पाठ का नाम भी 'गिल्लू' ही रखा गया है। लेखिका ने जो भी समय गिल्लू के साथ बिताया उस का वर्णन लेखिका ने इस पाठ में किया है|

पाठ सार: इस पाठ में लेखिका ने अपने जीवन के उस पड़ाव का वर्णन किया है जहाँ उन्होंने एक गिलहरी के बच्चे को कौवे से बचाया था और उसे अपने घर में रखा था। लेखिका ने उस गिलहरी के बच्चे का नाम गिल्लू रखा था। लेखिका कहती है कि आज जूही के पौधे में कली निकल आई है जो पिले रंग की है। उस कली को देखकर लेखिका को उस छोटे से जीव की याद आ गई जो उस जूही के पौधे की हरियाली में छिपकर बैठा रहता था। परन्तु लेखिका कहती है कि अब तो वह छोटा जीव इस जूही के पौधे की जड़ में मिट्टी बन कर मिल गया होगा। क्योंकि अब वह मर चुका है और लेखिका ने उसे जूही के पौधे की जड़ में दबा दिया था।लेखिका कहती है कि अचानक एक दिन जब वह सवेरे कमरे से बरामदे में आई तो उसने देखा कि दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से चुपके से छूकर छुप जाना और फिर छूना जैसा कोई खेल खेल रहे हैं|लेखिका कहती है कि यह कौवा भी बहुत अनोखा पक्षी हैएक साथ ही दो तरह का व्यवहार सहता है-, कभी तो इसे बहुत आदर मिलता है और कभी बहुत ज्यादा अपमान सहन करना पड़ता है। लेखिका कहती है कि जब वह कौवो के बारे में सोच रही थी तभी अचानक से उसकी उस सोच में कुछ रुकावट आ गई क्योंकि उसकी नजर गमले और दीवार को जोड़ने वाले भाग में छिपे एक छोटेसे जीव - पर पड़ी। जब लेखिका ने निकट जाकर देखा तो पाया कि वह छोटा सा जीव एक गिलहरी का छोटासा बच्चा है। उस छोटे से जीव के लिए उन दो कौवों की चोंचों के दो घाव ही बहुत थे-, इसलिए वह बिना किसी हरकत के गमले से लिपटा पड़ा था। लेखिका ने उसे धीरे से उठाया और अपने कमरे में ले गई, फिर रुई से उसका खून साफ़ किया और उसके जख्मों पर पेंसिलिन नामक दवा का मरहम लगाया। कई घंटे तक इलाज करने के बाद उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और निश्चिन्त हो गया कि वह लेखिका की उँगली अपने

दो नन्हे पंजों से पकड़कर और अपनी नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधरउधर देखने - लगा।सब उसे अब गिल्लू कह कर पुकारते थे। लेखिका कहती है कि जब वह लिखने बैठती थी तब अपनी ओर लेखिका का ध्यान आकर्षित करने की गिल्लू की इतनी तेज इच्छा होती थी कि उसने एक बहुत ही अच्छा उपाय खोज निकाला था। वह लेखिका के पैर तक आता था और तेज़ी से परदे पर चढ़ जाता था और फिर उसी तेज़ी से उतर जाता था। उसका यह इस तरह परदे पर चढ़ना और उतरने का क्रम तब तक चलता रहता था जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए नहीं उठती थी। लेखिका गिल्लू को पकड़कर एक लंबे लिफ़ाफ़े में इस तरह से रख देती थी। जब गिल्लू को उस लिफ़ाफ़े में बंद पड़ेचिक की आवाज करके मानो -पड़े भूख लगने लगती तो वह चिक- लेखिका को सूचना दे रहा होता कि उसे भूख लग गई है और लेखिका के द्वारा उसे काजू या बिस्कुट मिल जाने पर वह उसी स्थिति में लिफ़ाफ़े से बाहर वाले पंजों से काजू या बिस्कुट पकड़कर उसे कुतरता। लेखिका कहती है कि बाहर की गिलहरियाँ उसके घर की खिड़की की जाली के पास आकर चिकचिक करके न जाने क्या कहने लगीं-? जिसके कारण गिल्लू खिड़की से बाहर झाँकने लगा। गिल्लू को खिड़की से बाहर देखते हुए देखकर उसने खिड़की पर लगी जाली की कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस रास्ते से गिल्लू जब बाहर गया तो उसे देखकर ऐसा लगा जैसे बाहर जाने पर सचमुच ही उसने आजादी की साँस ली हो। लेखिका को जरुरी कागज़ोपत्रों- के कारण बाहर जाना पड़ता था और उसके बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता था। लेखिका कहती है कि उसने कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला और अंदर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने उस जाली के दरवाजे से अंदर आया और लेखिका के पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। उस दिन से यह हमेशा का काम हो गया था। काजू गिल्लू का सबसे मनपसंद भोजन था और यदि कई दिन तक उसे काजू नहीं दिया जाता था तो वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बंद कर देता था या झूले से नीचे फेंक देता था।लेखिका कहती है कि उसी बीच उसे मोटर दुर्घटना में घायल होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब कोई लेखिका के कमरे का दरवाजा खोलता तो गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता, उसे लगता कि लेखिका आई है और फिर जब वह लेखिका की जगह किसी दूसरे को देखता तो वह उसी तेजी के साथ अपने घोंसले में जा बैठता। तो भी लेखिका के घर जाता वे सभी गिल्लू को काजू दे आते, परंतु अस्पताल से लौटकर जब लेखिका ने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे लेखिका को पता चला कि वह उन दिनों अपना मनपसंद भोजन भी कितना कम खाता रहा। लेखिका की अस्वस्थता में वह तकिए पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हेनन्हे पंजों से -

धीरे सहलाता रहता कि जब वह लेखिका के सिरहाने -लेखिका के सिर और बालों को इतने धीरे से हटता तो लेखिका को ऐसा लगता जैसे उसकी कोई सेविका उससे दूर चली गई हो|

लेखिका कहती है कि गिलहरियों के जीवन का समय दो वर्ष से अधिक नहीं होता, इसी कारण गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत भी नजदीक आ ही गया। दिन भर उसने न कुछ खाया न बाहर गया। रात में अपने जीवन के अंतिम क्षण में भी वह अपने झूले से उतरकर लेखिका के बिस्तर पर आया और अपने ठंडे पंजों से लेखिका की वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन में पकड़ा था जब वह मृत्यु के समीप पहुँच गया था। सुबह की पहली किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया। अर्थात उसकी मृत्यु हो गई। लेखिका ने गिल्लू की मृत्यु के बाद उसका झूला उतारकर रख दिया और खिड़की की जाली को बंद कर दिया, परंतु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के दूसरी ओर अर्थात बाहर चिक-चिक करती ही रहती है और जूही के पौधे में भी बसंत आता ही रहता है। सोनजुही की लता के नीचे ही लेखिका ने गिल्लू की समाधि बनाई थी अर्थात लेखिका ने गिल्लू को उस जूही के पौधे के निचे दफनाया था क्योंकि गिल्लू को वह लता सबसे अधिक प्रिय थी। लेखिका ने ऐसा इसलिए भी किया था क्योकि लेखिका को उस छोटे से जीव का, किसी बसंत में जुही के पीले रंग के छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, लेखिका को एक अलग तरह की ख़ुशी देता था ।

*-प्रश्नों के उत्तर-

प्रश्न 1.सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन से विचार उमड़ने लगे?
उत्तर-सोनजुही में लगी पीली कली को देखकर लेखिका के मन में यह विचार आया कि गिल्लू सोनजुही के पास ही मिट्टी में दबाया गया था। इसलिए अब वह मिट्टी में विलीन हो गया होगा और उसे चौंकाने के लिए सोनजुही के पीले फूल के रूप में फूट आया होगा|

प्रश्न 2.पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है?
उत्तर-हिंदू संस्कृति में ऐसी मान्यता है कि पितृपक्ष में हमारे पूर्वज हमसे कुछ पाने के लिए कौए के रूप में हमारे सामने आते हैं। इसके अलावा कौए हमारे दूरस्थ रिश्तेदारों के आगमन की सूचना भी देते हैं, जिससे उसे आदर मिलता है। दूसरी ओर कौए की कर्कश भरी काँव-काँव को हम अवमानना के रूप में प्रयुक्त करते हैं। इससे वह तिरस्कार का पात्र बनता है। इस प्रकार एक साथ आदर और अनादर पाने के कारण कौए को समादरित और अनादरित कहा गया है।

प्रश्न 3.गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?
उत्तर-महादेवी वर्मा ने गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार बड़े ध्यान से ममतापूर्वक किया। पहले उसे कमरे

में लाया गया। उसका खून पोंछकर घावों पर पेंसिलिन लगाई गई। उसे रुई की बत्ती से दूध पिलाने की कोशिश की गई। परंतु दूध की बूंदें मुँह के बाहर ही लुढ़क गईं। कुछ समय बाद मुँह में पानी टपकाया गया। इस प्रकार उसका बहुत कोमलतापूर्वक उपचार किया गया।

प्रश्न 4.लेखिको का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?
उत्तर-लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू-
-उसके पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और उसी तेज़ी से उतरता था। वह ऐसा तब तक करता था, जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए न उठ जाती।
-भूख लगने पर वह चिक-चिक की आवाज़ करके लेखिका का ध्यान खींचता था|

प्रश्न 5.गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया?
उत्तर-महादेवी ने देखा कि गिल्लू अपने हिसाब से जवान हो गया था। उसका पहला वसंत आ चुका था। खिड़की के बाहर कुछ गिलहरियाँ भी आकर चिकचिक करने लगी थीं। गिल्लू उनकी तरफ प्यार से देखता रहता था। इसलिए महादेवी ने समझ लिया कि अब उसे गिलहरियों के बीच स्वच्छंद विहार के लिए छोड़ देना चाहिए। चाहिए।लेखिका ने गिल्लू की जाली की एक कील इस तरह उखाड़ दी कि उसके आने-जाने का रास्ता बन गया। अब वह जाली के बाहर अपनी इच्छा से आ-जा सकता था|

प्रश्न 6.गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था?
उत्तर-लेखिका एक मोटर दुर्घटना में आहत हो गई थी। अस्वस्थता की दशा में उसे कुछ समय बिस्तर पर रहना पड़ा था। लेखिका की ऐसी हालत देख गिल्लू परिचारिका की तरह उसके सिरहाने तकिए पर बैठा रहता और अपने नन्हें-नन्हें पंजों से उसके (लेखिका के) सिर और बालों को इस तरह सहलाता मानो वह कोई परिचारिका हो।

प्रश्न 7.गिल्लू की किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है?
उत्तर-गिल्लू की निम्नलिखित चेष्टाओं से महादेवी को लगा कि अब उसका अंत समीप है-
-उसने दिनभर कुछ भी नहीं खाया।
- वह रात को अपना झूला छोड़कर महादेवी के बिस्तर पर आ गया और उनकी उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया|

प्रश्न 8.'प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया'का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-आशय यह है गिल्लू का अंत समय निकट आ गया था। उसके पंजे ठंडे हो गए थे। उसने लेखिका की अँगुली पकड़ रखा था। उसने उष्णता देने के लिए हीटर जलाया। रात तो जैसे-तैसे बीती परंतु सवेरा होते ही गिल्लू के जीवन का अंत हो गया।

प्रश्न 9.सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिको के मन में किस विश्वास का जन्म होता है?
उत्तर-सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू की समाधि बनी थी। इससे लेखिका के मन में यह विश्वास जम गया कि एक-न-एक दिन यह गिल्लू इसी सोनजुही की बेल पर पीले चटक फूल के रूप में जन्म ले लेगा|

*-लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.लेखिका को अकस्मात किस छोटे जीव का स्मरण हो आया और कैसे?
उत्तर-लेखिका ने देखा कि सोनजुही में पीली कली आ गई है। यह देखकर उसे अकस्मात छोटे जीव गिल्लू का स्मरण हो आया। सोनजुही की इसी सघन हरियाली में गिल्लू छिपकर बैठता था जो अचानक लेखिका के कंधे पर कूदकर उसे चौंका देता था। लेखिका को लगा कि पीली कली के रूप में गिल्लू ही प्रकट हो गया है|

प्रश्न 2.कौए की काँव-काँव के बाद भी मनुष्य उसे कब आदर देता है और क्यों?
उत्तर-कौए की काँव-काँव के बाद भी मनुष्य उसे पितृपक्ष में आदर देता है, क्योंकि हमारे समाज में ऐसी मान्यता है कि हमारे पुरखे हमसे कुछ पाने के लिए पितृपक्ष में कौओं के रूप में आते हैं। इसके अलावा कौआ हमारे किसी दूरस्थ के आने का संदेश भी लेकर आता है|

प्रश्न 3.कौए अपना सुलभ आहार कहाँ खोज रहे थे और कैसे?
उत्तर-लेखिका ने देखा कि गमले और दीवार की संधि में गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है जो संभवत-घोंसले से गिर पड़ा होगा। कौए उसे उठाने के प्रयास में चोंच मार रहे थे। इसी छोटे बच्चे में कौए अपना सुलभ आहार खोज रहे थे|

प्रश्न 4.लेखिका की अनुपस्थिति में गिल्लू प्रकृति के सान्निध्य में अपना जीवन किस प्रकार बिताता था?
उत्तर-लेखिका की अनुपस्थिति में गिल्लू खिड़की में बनी जाली को उठाने से बने रास्ते द्वारा बाहर चला जाता था। वह दूसरी गिलहरियों के झुंड में शामिल होकर उनका नेता बन जाता और हर डाल पर उछल-कूद करता रहता था। वह लेखिका के लौटने के समय कमरे में वापस आ जाता था।

प्रश्न 5.गिल्लू का प्रिय खाद्य क्या था? इसे न पाने पर वह क्या करता था?
उत्तर-गिल्लू का प्रिय खाद्य काजू था। इसे वह अपने दाँतों से पकड़कर कुतर-कुतरकर खाता रहता था। गिल्लू को जब काजू नहीं मिलता था तो वह खाने की अन्य चीजें लेना बंद कर देता था या उन्हें झूले से नीचे फेंक देता था।

प्रश्न 6.लेखिका ने कैसे जाना कि गिल्लू उसकी अनुपस्थिति में दुखी था?
उत्तर-लेखिको एक मोटर दुर्घटना में घायल हो गई। इससे उसे कुछ समय अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब लेखिका के कमरे का दरवाजा खोला जाता तो गिल्लू झूले से नीचे आता परंतु किसी और को देखकर तेजी से भागकर झुले में चला जाता। सब उसे वहीं काजू दे आते, परंतु जब लेखिका ने अस्पताल से आकर झूले की सफ़ाई की तो उसे झूले में काजू मिले जिन्हें गिल्लू ने नहीं खाया था। इससे लेखिका ने जान लिया कि उसकी अनुपस्थिति में गिल्लू दुखी थी|

प्रश्न 7.भोजन के संबंध में लेखिका को अन्य पालतू जानवरों और गिल्लू में क्या अंतर नज़र आया?
उत्तर-लेखिका ने अनेक पशु-पक्षी पाल रखे थे, जिनसे वह बहुत लगाव रखती थी परंतु भोजन के संबंध में लेखिका को अन्य पालतू जानवरों और गिल्लू में यह अंतर नज़र आया कि उनमें से अिकसी जानवर ने लेखिका के साथ उसकी थाली में खाने की हिम्मत नहीं कि जबकि गिल्लू खाने के समय मेज़ पर आ जाता और लेखिका की थाली में बैठकर खाने का प्रयास करता|

व्याकरण-

शब्द का वर्ण-विच्छेद :
किसी शब्द या ध्वनि के समूह के वर्गों को अलग-अलग लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। आइए, वर्ण-विच्छेद के कुछ उदाहरण देखते हैं –

सड़क = स् + अ + ड़ + अ + क् + अ
भक्त = भ् + अ + क् + त् + अ
महात्मा = म् + अ + ह् + आ + त् + म् + आ
कविता = क् + अ + व् + इ + त् + आ
प्रयोग = प + र् + अ + य् + ओ + ग् + अ
अद्भुत = अ + द् + भ् + उ + त् + अ
कलम = क् + अ + ल् + अ + म् + अ
पाठशाला = प् + आ + ठ् + अ + श् + आ + ल् + आ
आराधना = आ + र् + आ + ध् + अ + न् + आ
प्राकृतिक = प् + र् + आ + क् + ऋ + त + इ + क् + अ

सर्वमान्य = स् + अ + र् + व् + अ + म् + आ + न् + य् + अ
अर्जुन = अ + र् + ज् + उ + न् + अ
परिश्रम = प् + अ + र + इ + श् + र् + अ + म् + अ
क्षत्रिय = क् + ष् + अ + त् + र् + इ + य् + अ
परिक्रमा = प् + अ + र् + इ + क् + र् + अ + म् + आ
क्षमा = क् + ष् + अ + म् + आ
विज्ञान = व् + इ + ज् + ञ् + आ + न् + अ
गुरुद्वारा = ग् + उ + र् + उ + द् + व् + आ + र् + आ
आइए इन्हें भी जानें –

वर्ण-विच्छेद करते समय निम्नलिखित बातों को जानना आवश्यक है –

(i) 'रि' और 'ऋ' के रूप –
परिचय = प् + अ + र् + इ + च् + अ + य् + अ
रिषभ = र् + इ + ष् + अ + भ् + अ ।
पृथक = प् + ऋ + थ् + अ + क् + अ
कृपा = क् + ऋ + प् + आ

(ii) 'र' और ' ' तथा ' ' की मात्राएँ –
रुस्तम = र् + उ + स् + त् + अ + म् + अ
रुपया = र् + उ + प् + अ + य् + आ
रूपा = र् + ऊ + प् + आ
रूठना = र् + ऊ + ठ् + अ + न् + आ

(iii) 'ह' के विभिन्न संयुक्त –
रूपह्रस्व = ह् + र + अ + स् + व् + अ
हृदय = ह् + ऋ + द् + अ + य् + अ
प्रह्लाद = प् + र् + अ + ह् + ल् + आ + द् + अ
चिह्न = च् + इ + ह् + न् + अ

(iv) 'द' के संयुक्त –
रूपद्वार = द् + व् + आ + र् + अ
द्रव्य = द् + र् + अ + व् + य् + अ

उद्देश्य = उ + द् + द् + ए + श् + य् + अ
विरुद्ध = व् + इ + र् + उ + द् + ध् + अ

(v)
'इ' की मात्रा—शब्दों में 'इ' की मात्रा 'ि' लिखी पहले जाती है और बोली बाद में, इसलिए शब्दो
समय 'इ' की मात्रा को बाद में लगाया जाता है; जैसे-

(vi)
अनुस्वार में लगे बिंदु को (ं) जानना—
अंगूर = अं + ग् + ऊ + र् + अ
गंगा = ग् + अ + ङ् + ग् + आ
कंबल = क् + अं(अ + म्) + ब् + अ + ल् + अ
पम्प = प् + अ + म् + प् + अ
चंद्र = च् + अं(अ + न्) + द् + र् + अ
ठंडक = ठ् + अं + ड् + अ + क् + अ
चंदन = च् + अं(अ + न्) + द् + अ + न् + अ
चंचु = च् + अं(अ + ञ्) + च् + उ
ठंडा = ठ् + अं(अ + ण्) + ड् + आ

वर्ण-विच्छेद के उदाहरण –

अंग = अं + ग् + अ
अंधा = अं+ ध् + आ
अंग्रेज़ = अं+ ग् + र् + ए + ज् + अ
अंगार = अँ + ग् + आ + र
अचला _ = अ + च् + अ + ल् + आ
अधुना = अ + ध् + उ + न् + आ
अक्षर = अ + क् + ष् + अ + र् + अ
अवश्य = अ + व् + अ + श् + य् + अ
अग्नि = अ + ग् + न् + इ
अमृत = अ + म् + ऋ + त् + अ
अप्रतिभ = अ + प् + र् + अ + त् + इ + भ् + अ
अभ्यागत = अ + भ् + य् + आ + ग् + अ + त् + अ

आश्रम = आ + श् + र् + अ + म् + अ

इज़्ज़त = इ + ज् + ज् + अ + त् + अ

इस्तेमाल = इ + स् + त् + ए + म् + आ + ल् + अ

उक्ति = उ + क् + त् + इ

उच्चारण = उ + च् + च् + आ + र् + अ + ण् + अ

ऋचा = ऋ+ च् + आ

एकाग्र = ए + क् + आ + ग् + र् + अ

एकाक्षर = ए + क् + आ + क् + ष् + अ + र् + अ

औषधि = औ + ष् + अ + ध् + इ

कंगारू = क् + अं+ ग् + आ + र् + ऊ

कन्हाई = क् + अ + न् + ह् + आ + ई

कुशाग्र = क् + उ + श् + आ + ग् + र् + अ

अव्वल = अ + व् + व् + अ + ल् + अ

आकार = आ + क् + आ + र् + अ

आख्यान = आ + ख् + य् + आ + न् + अ

आक्रांत = आ + क् + र् + आ + न् + त् + अ

आजीवन = आ + ज् + ई + व् + अ + न् + अ

आज्ञा = आ + ज् + ञ् + आ

आधार = आ + ध् + आ + र् + अ

आपूर्ति = आ + प् + ऊ + र् + त् + इ

आरूढ़ = आ + र् + ऊ + द + अ

गृहस्थ = ग् + ऋ + ह् + अ + स् + थ् + अ

ग्राहक = ग् + र् + आ + ह् + अ + क् + अ

ग्राह्य = ग् + र् + आ + ह् + य् + अ

घृणित = घ् + ऋ + ण् + इ + त् + अ

घंटी = घ् + अं+ ट् + ई

चकोर = च् + अ + क् + ओ + र् + अ

चक्कर = च् + अ + क् + क् + अ + र् + अ

चक्र = च् + अ + क् + र् + अ

चतुर्थ = च् + अ + त् + उ + र् + थ् + अ

चाँदनी = च् + आँ + द् + अ + न् + ई ।

चक्षु = च् + अ + क् + ष् + उ

चित्रित = च् + इ + त् + र् + इ + त् + अ

चिह्नित = च् + इ + ह् + न् + इ + त् + अ

ज़ख्मी = ज् + अ + ख् + म् + ई

जीवन = ज् + ई + व् + अ + न् + अ

जुर्माना = ज् + उ + र् + म् + आ + न् + आ

जागृति = ज् + आ + ग् + ऋ + त् + इ

जिज्ञासा = ज् + इ + ज् + ञ् + आ + स् + आ

जिह्वा = ज् + इ + ह् + व् + आ

जुझारू = ज् + उ + झ् + आ + र् + ऊ

ज्ञापित _ = ज् + ञ् + आ + प् + इ + त् + अ

ज्योत्स्ना = ज् + य् + ओ + त् + स् + न् + आ

झंडा = झ् + अं+ ड् + आ

टिप्पणी = ट् + इ + प् + प् + अ + ण + ई

ठाकुर = ठ् + आ + क् + उ + र् + आ

ढूँढना = द् + ऊ + * + द + अ + न् + अ

तांत्रिक = त् + आ + अं+ त् + र् + इ + क् + अ

त्रुटि = त् + र् + उ + ट् + इ

त्वरित = त् + व् + अ + र् + इ + त् + अ

तालाब = त् + आ + ल् + आ + ब् + अ

कौतुक = क् + औ + त् + उ + क् + अ

क्रय = क् + र् + अ + य् + अ

कृत्रिम = क् + ऋ + त् + र् + इ + म् + अ

क्रोध = क् + र् + ओ + ध् + अ

क्ले श = क् + ल् + ए + श् + अ

खट्टा = ख् + अ + ट् + ट् + आ

ख्याति = ख + य् + आ + त् + इ

गाँठ = ग् + आँ + ठ् + अ

गद्य = ग् + अ + द् + य् + अ

त्रिभुज = त् + र + इ + भ् + उ + ज् + अ

तृष्णा = त् + ऋ + ष् + ण् + आ

दफ़्तर = द् + अ + फ़् + त् + अ + र् + अ

देवत्व = द् + ए + व् + अ + त् + व् + अ

दंभी = द् + अं+ भ् + ई

दृष्टि = द् + ऋ + ष् + ट् + इ

द्रवित = द् + र् + अ + व् + इ + त् + अ

दैनंदिनी = द् + ऐ + न् + अं + द् + इ + न् + ई

द्युति = द् + य् + उ + त् + इ

द्वापर = द् + व् + आ + प् + अ + र् + अ

द्वितीया = द् + व + इ + त् + ई + य् + आ

दविज = द् + व् + इ + ज् + अ

द्वैत = द् + व् + ऐ + त् + अ

ध्वजा = ध् + व् + अ + ज् + आ

ध्वस्त = ध् + व् + अ + स् + त् + अ

नंदिनी = न् + अं + द् + इ + न् + ई

नक्काशी = न् + अ + क् + क् + आ + श् + ई

निरुपम = न् + इ + र् + उ + प् + अ + म् + अ

नास्तिक = न् + आ + स् + त् + इ + क् + अ

निस्तब्ध = न् + इ + स् + त् + अ + ब् + ध् + अ

नृत्य = न् + ऋ + त् + य् + अ

पुष्प = प् + उ + ष् + प् + अ

प्रधान = प् + र् + अ + ध् + आ + न् + अ

प्राच्य = प् + र् + आ + च् + य् + अ

पृथ्वी = प् + ऋ + थ् + व् + ई

फलदार = फ् + अ + ल् + अ + द् + आ + र् + अ

फिक्र = फ् + इ + क् + र् + अ

बाँस = ब् + आँ + स् + अ

बृहद = ब् + ऋ + ह् + अ + द् + अ

ब्रह्मा = ब् + र् + अ + ह् + म् + आ

लक्षण = ल् + अ + क् + ष् + अ + ण् + अ

वत्सल = व् + अ + त् + स् + अ + ल् + अ

विरुद्ध = व् + इ + र् + उ + द् + ध् + अ

व्योम = व् + य् + ओ + म् + अ

व्रत = व् + र् + अ + त् + अ

शक्ति = श् + अ + क् + त् + इ

सृष्टि = स् + ऋ + ष् + ट् + इ

हार्दिक = ह् + आ + र् + द् + इ + क् + अ

लेखन:-अनुच्छेद-लेखन –

१-क्रिकेट का नया प्रारूप-ट्वेंटी-ट्वेंटी

संकेत बिंदु –

- प्रस्तावना
- टेस्ट क्रिकेट –
- टी-ट्वेंटी प्रारूप
- उपसंहार
- क्रिकेट के विभिन्न प्रारूप
- एक दिवसीय क्रिकेट
- टी-ट्वेंटी का रोमांच एवं सफलता

प्रस्तावना-यूँ तो मनुष्य का खेलों से बहुत ही पुराना नाता है, पर मनुष्य ने शायद ही कभी यह सोचा हो कि ये खेल एक दिन उसे यश, धन और प्रतिष्ठा दिलाने का साधन सिद्ध होंगे। जिन खेलों को वह मात्र मनोरंजन के लिए खेला करता था, वही खेल अब खराब नहीं नवाब बना रहे हैं। खेलों में आज लोकप्रियता के शिखर पर क्रिकेट का स्थान है। इसकी लोकप्रियता के कारण आज हर बच्चा क्रिकेट का खिलाड़ी बनना चाहता है। वर्तमान में क्रिकेट का ट्वेंटी-ट्वेंटी रूप बहुत ही लोकप्रिय है। क्रिकेट के विभिन्न प्रारूप – भारत में क्रिकेट की शुरुआत अंग्रेज़ों के समय हुई। अंग्रेज़ों का यह राष्ट्रीय खेल था, जिसे वे अपने साथ यहाँ लाए। कालांतर में यह विभिन्न देशों में फैला। उस समय क्रिकेट को मुख्यतया टेस्ट क्रिकेट के रूप में खेलते थे। समय की व्यस्तता और रुचि में आए बदलाव के साथ ही क्रिकेट का प्रारूप बदलता गया। एक दिवसीय क्रिकेट और टी-ट्वेंटी इसका लोकप्रिय रूप है।

टेस्ट क्रिकेट – टेस्ट क्रिकेट पाँच दिनों तक खेला जाने वाला रूप है। इसमें पाँचों दिन 90-90 ओवर की प्रतिदिन गेंदबाजी की जाती है। दोनों टीमें दो-दो बार बल्लेबाज़ी करती हैं। विपक्षी टीम को दोबार आल आउट करना होता है। ऐसा ही दूसरी टीम करती है, परंतु प्राय; पाँच दिन तक मैच चलने के बाद भी खेल का परिणाम नहीं निकलता है और मैच ड्रा कर दिया जाता है। यह प्रारूप धीरे-धीरे अपनी लोकप्रियता खोता जा रहा है। एक दिवसीय क्रिकेट – यह क्रिकेट का दूसरा प्रारूप है, जिसे एक दिन में एक सौ ओवर अर्थात छह सौ आधिकारिक गेंदें खेलकर पूरा किया जाता है। प्रत्येक टीम 50-50 ओवर खेलती है। पहले बल्लेबाज़ी करने वाली टीम जितने रन बनाती है उससे एक रन अधिक बनाकर दूसरी टीम को मैच जीतना होता है। जो टीम ऐसा कर पाती है, वही विजयी होती है। यह क्रिकेट का बेहद रोमांचक प्रारूप है, जिसे दर्शक खूब पसंद करते हैं। एक ही दिन में प्रायः मैच का परिणाम निकलने और पूरा हो जाने के कारण क्रिकेट स्टेडियमों में दर्शकों की भीड़ देखने लायक होती है। टी-ट्वेंटी प्रारूप- यह क्रिकेट का सर्वाधिक लोकप्रिय प्रारूप है जिसे चालीस ओवरों में पूरा कर लिया जाता है। प्रत्येक टीम बीस- . बीस ओवर खेलती है। इधर सात-आठ साल पहले ही शुरू हुए उस प्रारूप को फटाफट क्रिकेट कहा जाता है जिसकी लोकप्रियता ने अन्य प्रारूपों को पीछे छोड़ दिया है। यह प्रारूप अधिक रोमांचक एवं मनोरंजक है। इसे देखकर दर्शकों का पूरा पैसा वसूल हो जाता है। यह क्रिकेट सामान्यतया सायं चार बजे के बाद ही शुरू होता है और आठ-साढ़े आठ बजे तक खत्म हो जाता है। इसमें परिणाम और मनोरंजन के लिए दर्शकों को पूरे दिन स्टेडियम में नहीं बैठना पड़ता है। भारत में शुरू हुई आई०पी०एल० लीग में इसी प्रारूप से खेला जाता है जो भविष्य के खिलाड़ियों के लिए एक नया प्लेटफॉर्म तथा नवोदित खिलाड़ियों के लिए कमाई का साधन बन गया है। अब तो आलम यह है कि इस प्रारूप में चार सौ से अधिक रन तक बन जाते हैं। टी-ट्वेंटी का रोमांच एवं सफलता-क्रिकेट का यह नया प्रारूप अत्यंत रोमांचक है। 20 ओवरों के मैच में 200 से अधिक रन बन जाते हैं। ट्वेंटी-ट्वेंटी प्रारूप का रोमांच तब देखने को मिला जब युवराज ने अंग्रेज़ गेंदबाज़ किस ब्राड के एक ही ओवर में छह छक्कों को दर्शकों के बीच पहुँचा दिया। ताबड़तोड़ बल्लेबाज़ी ही इस प्रारूप की सफलता का रहस्य है। उपसंहार- हमारे देश में क्रिकेट अत्यंत लोकप्रिय है। खेल के इस नए प्रारूप ने इसे और भी लोकप्रिय बना दिया है। आस्ट्रेलियाई गेंदबाज़ शेनवान और सचिन तेंदुलकर की रिटायर्ड खिलाड़ियों की टीमों ने अमेरिका में तीन मैचों की सीरीज खेलकर दर्शकों की खूब वाह-वाही लूटी। क्रिकेट का यह नया प्रारूप टी-ट्वेंटी दिनोंदिन लोकप्रिय होता जा रहा है।

२-अनुशासन की समस्या

संकेत बिंदु –
प्रस्तावना

छात्र और अनुशासन
अनुशासनहीनता के कारण

उपसंहार

अनुशासन की आवश्यकता

प्रकृति में अनुशासन

समाधान हेतु सुझाव

उपसंहार प्रस्तावना-'शासन' शब्द में 'अनु' उपसर्ग लगाने से अनुशासन शब्द बना है, जिसका अर्थ है- शासन के पीछे अनुगमन करना, शासन के पीछे चलना अर्थात समाज और राष्ट्र द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करते हुए मर्यादित आचरण करना अनुशासन कहलाता है। अनुशासन का पालन करने वाले लोग ही समाज और राष्ट्र को उन्नति के पथ पर ले जाते हैं। इसी तरह अनुशासनहीन नागरिक ही किसी राष्ट्र के पतन का कारण बनते हैं।अनुशासन की आवश्यकता- अनुशासन की आवश्यकता सभी उम्र के लोगों को जीवन में कदम-कदम पर होती है। छात्र जीवन, मानवजीवन की रीढ़ होता है। इस काल में सीखा हुआ ज्ञान और अपनाई हुई आदतें जीवन भर काम आती हैं। इस कारण छात्र जीवन में अनुशासन की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। अनुशासन के अभाव में छात्र प्रकृति प्रदत्त शक्तियों का न तो प्रयोग कर सकता है और न ही विद्यार्जन के अपने दायित्व का भली प्रकार निर्वाह कर सकता है। छात्र ही किसी देश का भविष्य होते हैं, अतः छात्रों का अनुशासनबद्ध रहना समाज और राष्ट्र के हित में होता है।

छात्र और अनुशासन – कुछ तो सरकारी नीतियाँ छात्रों को अनुशासनविमुख बना रही हैं और कुछ दिन-प्रतिदिन मानवीय मूल्यों में आती गिरावट छात्रों को अनुशासनहीन बना रही है। आठवीं कक्षा तक अनिवार्य रूप से उत्तीर्ण कर अगली कक्षा में भेजने की नीति के कारण छात्र पढ़ाई के अलावा अनुशासन से भी दूरी बना रहे हैं। इसके अलावा अनुशासन के मायने बदलने से भी छात्रों में अब पहले जैसा अनुशासन नहीं दिखता है। इस कारण प्रायः स्कूलों और कॉलेजों में हड़ताल, तोड़-फोड़, बात-बात पर रेल की पटरियों और सड़कों को बाधित कर यातायात रोकने का प्रयास करना आमबात होती जा रही है। छात्रों में मानवीय मूल्यों की कमी कल के समाज के लिए चिंता का विषय बनती जा रही है।

प्रकृति में अनुशासन-हम जिधर भी आँख उठाकर देखें, प्रकृति में उधर ही अनुशासन नज़र आता है। सूरज का प्रातःकाल उगना और सायंकाल छिपना न हीं भूलता। चंद्रमा अनुशासनबद्ध तरीके से पंद्रह दिनों में अपना पूर्ण आकार बिखेरता है और नियमानुसार अपनी चाँदनी लुटाना नहीं भूलता। तारे रात होते ही आकाश में दीप जलाना नहीं भूलते हैं। बादल समय पर वर्षा लाना नहीं भूलते तथा पेड़-पौधे समय आने पर फल-फूल देना नहीं भूलते हैं। इसी प्रकार प्रातः होने का अनुमान लगते ही मुर्गा हमें जगाना नहीं भूलता है। वर्षा, शरद, शिशिर, हेमंत, वसंत, ग्रीष्म ऋतुएँ बारी-बारी से आकर अपना सौंदर्य बिखराना नहीं भूलती हैं। इसी प्रकार धरती भी फ़सलों के रूप में हमें उपहार देना नहीं भूलती। प्रकृति के सारे क्रियाकलाप हमें अनुशासनबद्ध जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं।अनुशासनहीनता के कारण- छात्रों में अनुशासनहीनता का मुख्य कारण दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली है। यह प्रणाली रटने पर बल देती है। दस, बारह और पंद्रह साल तक शिक्षार्जन से प्राप्त डिग्रियाँ लेकर भी किसी कार्य में निपुण नहीं होता है। यह शिक्षा क्लर्क पैदा करती है। नैतिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों के लिए शिक्षा में कोई स्थान नहीं है। छात्र भी 'येनकेन प्रकारेण' परीक्षा पास करना अपना कर्तव्य समझने लगे हैं।

अनुशासनहीनता का दूसरा महत्त्वपूर्ण कारण है- शिक्षकों द्वारा अपने दायित्व का सही ढंग से निर्वाह न करना। अब वे शिक्षक नहीं रहे जिनके बारे में यह कहा जाए –

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौ पाँय।
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविंद दियो बताय॥

समाधान हेतु सुझाव-छात्रों में अनुशासनहीनता दूर करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षा की प्रणाली और गुणवत्ता में सुधार किया जाना चाहिए। शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाया जाना चाहिए। शिक्षण की नई-नई तकनीक और विधियों को कक्षा कक्ष तक पहुँचाया जाना चाहिए। छात्रों के लिए खेलकूद और अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इसके अलावा परीक्षा प्रणाली में सुधार करना चाहिए। छात्रों को नैतिक मूल्यपरक शिक्षा दी जानी चाहिए तथा अध्यापकों को अपने पढ़ाने का तरीका रोचक बनाना चाहिए।

उपसंहार- अनुशासनहीनता मनुष्य को विनाश के पथ पर अग्रसर करती है। छात्रों पर ही देश का भविष्य टिका है, अतः उन्हें अनुशासनप्रिय बनाया जाना चाहिए। हमें अनुशासन का पालन करने के लिए प्रकृति से सीख लेनी चाहिए।

३-भ्रष्टाचार

संकेत बिंदु –

- प्रस्तावना
- भ्रष्टाचार के कारण
- उपसंहार
- भ्रष्टाचार के विविध क्षेत्र एवं रूप
- भ्रष्टाचार दूर करने के उपाय

प्रस्तावना – भ्रष्टाचार दो शब्दों 'भ्रष्ट' और 'आचार' के मेल से बना है। 'भ्रष्ट' का अर्थ है- विचलित या अपने स्थान से गिरा हुआ तथा 'आचार' का अर्थ है-आचरण या व्यवहार अर्थात किसी व्यक्ति द्वारा अपनी गरिमा से गिरकर कर्तव्यों के विपरीत किया गया आचरण भ्रष्टाचार है। यह भ्रष्टाचार हमें विभिन्न स्थानों पर दिखाई देता है जिससे जन साधारण को दो-चार होना पड़ता है। आज लोक सेवक की परिधि में आने वाले विभिन्न कर्मचारी जैसे कि बाबू, अधिकारी आदि इसे बढ़ाने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उत्तरदायी हैं।भ्रष्टाचार के विविधि क्षेत्र एवं रूप – भ्रष्टाचार का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। इसकी परिधि में विभिन्न सरकारी और अर्धसरकारी कार्यालय, राशन की सरकारी दुकानें, थाने और तरह-तरह की सरकारी अर्धसरकारी संस्थाएँ आती हैं। यहाँ नियुक्त बाबू व अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, एजेंट, चपरासी, नेता आदि जनसाधारण का विभिन्न रूपों में शोषण करते हैं। इन कार्यालयों में कुछ लिए दिए बिना काम करवाना टेढ़ी खीर साबित होता है। लोगों के काम में तरह-तरह के अड़गे लगाए जाते हैं और सुविधा शुल्क लिए बिना काम नहीं होता है। भ्रष्टाचार के बाज़ार में यदि व्यक्ति के पास पैसा हो तो वह किसी

को भी खरीद सकता है। यहाँ हर एक बिकने को तैयार है। बस कीमत अलग-अलग है। यह कीमत काम के अनुसार तय होती है। जैसा काम वैसा दाम। काम की जल्दबाज़ी और व्यक्ति की विवशता दाम बढ़ा देती है।भ्रष्टाचार के विविध रूप हैं। इसका सबसे प्रचलित और जाना-पहचाना नाम और रूप है-रिश्वत। यह रिश्वत नकद, उपहार, सुविधा आदि रूपों में ली जाती है। आम बोलचाल में इसे घूस या सुविधा शुल्क के नाम से भी जाना जाता है। लोग चप्पलें घिसने से बचाने, समय नष्ट न करने तथा मानसिक परेशानी से बचने के लिए स्वेच्छा या मज़बूरी में रिश्वत देने के लिए तैयार हो जाते हैं।भ्रष्टाचार का दूसरा रूप भाई-भतीजावाद के रूप में देखा जाता है। सक्षम अधिकारी अपने पद का दुरुपयोग करते हुए अपने चहेतों, रिश्तेदारों और सगे-संबंधियों को कोई सुविधा, लाभ या नौकरी देने के अलावा अन्य लाभ पहुँचाना भाई-भतीजावाद कहलाता है। ऐसा करने और कराने में आज के नेताओं को सबसे आगे रखा जा सकता है। इससे योग्य व्यक्तियों की अनदेखी होती है और वे लाभ पाने से वंचित रह जाते हैं।कमीशनखोरी भी भ्रष्टाचार का अन्य रूप है। सरकारी परियोजनाओं, भवनों तथा अन्य सेवाओं का काम तो कमीशन दिए बिना मिल ही नहीं सकता है। जो जितना अधिक कमीशन देता है, काम का ठेका उसे मिलने की संभावना उतनी ही प्रबल हो जाती है। इन ठेकों और बड़े ठेकों में करोड़ों के वारे-न्यारे होते हैं। बोफोर्स घोटाला, बिहार का चारा घोटाला, टू जी स्पेक्ट्रम घोटाला, कॉमन वेल्थ घोटाला, मुंबई का आदर्श सोसायटी घोटाला तो मात्र कुछ नमूने हैं।भ्रष्टाचार के कारण – समाज में दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार का बोलबाला बढ़ता ही जा रहा है। इसके अनेक कारण हैं। भ्रष्टाचार के कारणों में महँगी होती शिक्षा और अनुचित तरीके से उत्तीर्ण होना है। जो छात्र महँगी शिक्षा प्राप्त कर नौकरियों में आते हैं, वे रिश्वत लेकर पिछले खर्च को पूरा कर लेना चाहते हैं। एक बार यह आदत पड़ जाने पर फिर आजीवन नहीं छूटती है। इसका अगला कारण हमारी लचर न्याय व्यवस्था है जिसमें पकड़े जाने पर कड़ी कार्यवाही न होने से दोषी व्यक्ति बच निकलता है और मुकदमे आदि में हुए खर्च को वसूलने के लिए रिश्वत की दर बढ़ा देता है। उसके अलावा लोगों में विलासितापूर्ण जीवनशैली दिखावे की प्रवृत्ति, जीवन मूल्यों का ह्रास और लोगों का चारित्रिक पतन भी भ्रष्टाचार बढ़ाने के लिए उत्तरदायी हैं।भ्रष्टाचार दूर करने के उपाय – आज भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि इसे समूल नष्ट करना संभव नहीं है, फिर भी कठोर कदम उठाकर इस पर किसी सीमा तक अंकुश लगाया जा सकता है। भ्रष्टाचार रोकने का सबसे ठोस कदम है-जनांदोलन द्वारा जन जागरूकता फैलाना। समाज सेवी अन्ना हजारे और दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल द्वारा उठाए गए ठोस कदमों से इस दिशा में काफ़ी सफलता मिली है। इसके अलावा इसे रोकने के लिए कठोर कानून बनाने की आवश्यकता है ताकि एक बार पकड़े जाने पर रिश्वतखोर किसी भी दशा में लचर कानून का फायदा उठाकर छूट न जाए।

उपसंहार- भ्रष्टाचार हमारे समाज में लगा धुन है जो देश की प्रगति के लिए बाधक है। इसे समूल उखाड़ फेंकने के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए तथा रिश्वत न लेने-देने के लिए प्रतिज्ञा करनी चाहिए। इसके अलावा लोगों को चारित्रिक बल एवं जीवनमूल्यों का ह्रास रोकते हुए रिश्वत नहीं लेना चाहिए। आइए हम सभी रिश्वत न लेने-देने की प्रतिज्ञा करते हैं।

पत्र-लेखन-

१-अपने मित्र को अपने भाई की शादी में आमंत्रित करने के लिए एक पत्र लिखें।

अ ब स अपार्टमेंट,
लोधी रोड,
नई दिल्ली|

29 सितंबर,

प्रिय दीपिका,

यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करती हूँ वहां भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.

मेरे भाई की शादी इसी साल दिसंबर में हो रही है। क्या आपको पिछले साल मेरे जन्मदिन की पार्टी में शिरकत करने आए उनकी दोस्त याद है? यह वही लड़की है। वे तब से एक-दूसरे को जानते हैं। अब दोनों ने माता-पिता की सहमति से शादी के बंधन में बंधने का फैसला किया है और इस अवसर पर दोनों परिवार खुश हैं। आप सादर आमंत्रित हैं।कार्यक्रम 10 दिसंबर से शुरू होगी और 15 दिसंबर तक चलेगी। सतःल वही 'महराजा फोर्ट' है जहां हमने आपके चचेरे भाई की शादी में शिरकत की थी। मैं आपसे एक सप्ताह पहले पहुंचने का अनुरोध करती हूं| ताकि हम एक साथ योजना बना सकें और खरीदारी कर सकें। मैं जानती हूं कि आप भी उतनी ही उत्साहित होंगी जितना कि मैं हूं। मेरी मां ने पहले ही आपके परिवार से संपर्क किया है और उन्हें समारोह की तारीख, समय और स्थान के बारे में सूचित किया है। आप सभी से निवेदन है कि सुंदर क्षण में उपस्थित रहें। लेकिन यह मेरे सबसे अच्छे दोस्त के लिए मेरा व्यक्तिगत निमंत्रण है। अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालें क्योंकि किसी भी बहाने अनुमति नहीं है।

तुम्हारे जवाब का इंतज़ार कर रही हु। आपसे मिलने की उम्मीद है।

तुम्हारा सहेली
य र ल।

-2अपने मित्र को लगभग 150 शब्दों में अपने बोर्डिंग स्कूल के अनुभव का वर्णन करते हुए एक पत्र लिखें|

अ ब स अपार्टमेंट
लोधी रोड

नई दिल्ली

29 सितंबर, 20

प्रिय मित्र

यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करता हूँ वहां भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.

जैसा कि आप जानते हैं कि मुझे एक बोर्डिंग स्कूल में प्रवेश मिला है। मैं अपने शुरुआती दिनों के अनुभव आपके साथ साझा करना चाहता था। पहले मुझे काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था क्योंकि मैं बचपन से अपने परिवार से कभी दूर नहीं हुआ हूं। लेकिन हम अपने आप को एक छोटी सी दुनिया में कैद नहीं कर सकते हैं जो हमारे आराम के स्तर से मेल खाता है। मैं उस समय आपकी कीमती सलाह के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं जब मुझे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। आपने कहा था कि हमें परिसर में आए बिना निष्कर्ष पर नहीं पहुंचना चाहिए। आपके शब्द वास्तव में उत्साहजनक थे|उस समय यह एक साहसिक निर्णय लगता था लेकिन अब मैं धीरेधीरे और खुशी से नए - वातावरण के प्रति सजग हो रहा हूं। समय बीतने के साथ मुझे महसूस हुआ कि यहाँ का स्टाफ इतना समझदार और सहयोगी है।मुझे उनके साथ समायोजित होने में आसानी हुई। यहां पढ़ाने का तरीका बहुत प्रभावशाली है और मेरे पिछले स्कूल से बिल्कुल अलग है। सह-पाठयक्रम गतिविधियों पर अधिक ध्यान विभिन्न ब्लॉकों से दोस्त बनाने में बहुत मदद करता है। मुझे लगने लगा है कि मैं अब इस संस्था का हिस्सा हूं। मेरे नए स्कूल के बारे में साझा करने के लिए बहुत कुछ है जब हम मिलेंगे।

बेसब्री से इंतजार है जल्द ही आपको देखने का|

तुम्हारा दोस्त
अभिनव

3-अपने मित्र को एक पत्र लिखें जो सिर्फ एक दुर्घटना के साथ मिला, जो उसे लगभग 150 शब्दों में एक सांत्वना भरे स्वर में उसकी त्वरित वसूली के बारे में सूचित करता है।

अ ब स अपार्टमेंट

लोधी रोड

नई दिल्ली

29 सितंबर, 20

प्रिय माधव,

यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करता हूँ वहां भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.

मैं कल कॉफ़ी हाउस में शिव से मिला था और उन्होंने मुझे बताया था कि पिछले सप्ताह आप एक गंभीर दुर्घटना से ग्रसित हुए। खबर सुनकर मैं वास्तव में चौंक गया था और आपकी भलाई के बारे में चिंतित था। शिव ने मुझसे कहा कि तुम्हारे बाएं हाथ में भी मामूली फ्रैक्चर आया है। सड़क दुर्घटनाएं वास्तव में अब एक चिंता का कारण बन रही हैं।

सरकार द्वारा 'मोटर वाहन अधिनियम' जैसी कठोर नीतियों के बाद भी, उन्हें पूरी तरह से रोकना मुश्किल है। आपको अभी से सावधान रहना चाहिए। हमारी सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है। एक छोटी सी गलती से भारी भूल हो सकती है। मैं आपको वाहन चलाते समय चौकस और अनुशासित रहने की सलाह देता हूं। मैं सप्ताहांत में आपसे मिलने की योजना बना रहा हूं। मुझे उम्मीद है और आप जल्द ठीक हो जाएं|

ख्याल रखना।

तुम्हारा दोस्त
य र ल